राम जी की आरती

आरती कीजै श्री रघुवीर जी की,
सत चित आनंद शिव सुंदर की॥

दशरथ-तनय कौशल्या-नंदन,
सुर-मुनि-रक्षक दैत्य-निकंदन॥

अनुगत-भक्त भक्त-उर-नंदन,
मर्यादा पुरुषोत्तम वर की॥

निर्गुण-सगुण, अरूप-रूपनिधि,
सकल लोक-वन्दित विभिन्न विधि॥

हरण शोक-भय, दायक नव निधि,
माया रहित दिव्य नर वर की॥

जानकी पति सुर अधिपति जगपति,
अखिल लोक पाताल त्रिलोक गति॥

विश्व वन्द्य अवन्ह अमित गति,
एक मात्र गति सचराचर की॥

शरणागत वत्सल व्रतधारी,
भक्त कल्प तरुवर असुरारी॥

नाल लेट जग पावनकारी,
वानर सखा दीन दुःख हर की॥

आरती कीजै श्री रघुवीर जी की,
सत चित आनंद शिव सुंदर की॥

1

---

[1] सौजन्य से:

धर्मयात्रा **(DharmYaatra)**

वेबसाइट: https://dharmyaatra.in/

व्हाट्सऐप नंबर: +917410957600

नोट: यदि आप वैदिक ज्ञान 🔱, धार्मिक कथाएं 🕉️, मंदिर व ऐतिहासिक स्थल 🛕, भारतीय इतिहास, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य 🧠, योग व प्राणायाम 🧘, घरेलू नुस्खे 🥥, धर्म समाचार 📰, शिक्षा व सुविचार 👣, पर्व व उत्सव 🪔, राशिफल 🌌 तथा सनातन धर्म की अन्य धर्म शाखाएं ☸️ (जैन, बौद्ध व सिख) इत्यादि विषयों के बारे में प्रतिदिन कुछ ना कुछ जानना चाहते हैं तो आपको धर्मयात्रा संस्था के विभिन्न सोशल मीडिया खातों से जुड़ना चाहिए। उनके लिंक हैं:

व्हाट्सएप ग्रुप व्हाट्सएप चैनल

फेसबुक पेज इंस्टाग्राम प्रोफाइल